Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

बी.एल.आई.एस.

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातक

(Bachelor of Library and Information Science)

- Library, Information & Society
- Organising & Managing Information
- Communication Skills
- Document Processing: Practice
- Information Sources & Services
- ICT of Fundamentals
- Management of Library & Information Centre
- Information Products & Services
- ICT in Libraries

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Vaishali Gupta & Bhavya Gupta*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 2000/-

Content

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातक
(Bachelor of Liberary and Information Science)

Question Paper—June-2024 (Solved) – पुस्तकालय, सूचना और समाज 1-2

Question Paper—June-2023 (Solved) – पुस्तकालय, सूचना और समाज 1

Question Paper Exam Held in March 2022 (Solved) – पुस्तकालय, सूचना और समाज 1

Question Paper—June-2024 (Solved) – सूचना स्रोत तथा सेवाएँ 1

Question Paper—June-2023 (Solved) – सूचना स्रोत तथा सेवाएँ 1

Question Paper Exam Held in March 2022 (Solved) – सूचना स्रोत तथा सेवाएँ 1

Question Paper—June-2024 (Solved) – सूचना संगठन एवं प्रबंधन 1

Question Paper—June-2023 (Solved) – सूचना संगठन एवं प्रबंधन 1

Question Paper Exam Held in March 2022 (Solved) – सूचना संगठन एवं प्रबंधन 1-2

Question Paper—June-2024 (Solved) – सूचना संचार प्रौद्योगिकी के मूल-तत्त्व 1-2

Question Paper—June-2023 (Solved) – सूचना संचार प्रौद्योगिकी के मूल-तत्त्व 1-2

Question Paper Exam Held in March 2022 (Solved) – सूचना संचार प्रौद्योगिकी के मूल-तत्त्व 1

Question Paper—June-2024 (Solved) – COMMUNICATION SKILLS 1-4

Question Paper—June-2023 (Solved) – COMMUNICATION SKILLS 1-4

Question Paper Exam Held in March 2022 (Solved) – COMMUNICATION SKILLS 1-5

Question Paper—June-2024 (Solved) – पुस्तकालय और सूचना केंद्र का प्रबंधन 1-2

Question Paper—June-2023 (Solved) – पुस्तकालय और सूचना केंद्र का प्रबंधन 1

Question Paper Exam Held in March 2022 (Solved) – पुस्तकालय और सूचना केंद्र का प्रबंधन 1

Question Paper—Sample Question Paper-1 (Solved) – प्रलेख प्रसंस्करण : अभ्यास 1

Question Paper—Sample Question Paper-2 (Solved) – प्रलेख प्रसंस्करण : अभ्यास 1

Question Paper—Sample Question Paper-3 (Solved) – प्रलेख प्रसंस्करण : अभ्यास 1

Question Paper—June-2024 (Solved) – सूचना उत्पाद एवं सेवाएं 1

Question Paper—June-2023 (Solved) – सूचना उत्पाद एवं सेवाएं 1

Question Paper Exam Held in March 2022 (Solved) – सूचना उत्पाद एवं सेवाएं 1

Question Paper—June-2024 (Solved) – पुस्तकालय में सूचना संचार और प्रौद्योगिकी 1-2

Question Paper—June-2023 (Solved) – पुस्तकालय में सूचना संचार और प्रौद्योगिकी 1

Question Paper Exam Held in March 2022 (Solved) – पुस्तकालय में सूचना संचार और प्रौद्योगिकी 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

पुस्तकालय, सूचना और समाज
(Library, Information and Society)

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में पुस्तकालय और सूचना
(Library and Information in Social Perspective)

1. पुस्तकालय, सूचना एवं ज्ञान-आधारित समाज 1
   (Libraries, Information and Knowledge Based Sociey)
2. पुस्तकालयों के प्रकार 6
   (Types of Libraries)
3. सूचना संस्थान (Information Institutions) 13
4. पुस्तकालय विज्ञान के विनियम 18
   (Laws of Library Science)

पुस्तकालय एवं सूचना संबंधी विधान
(Library and Information in Related Legislation)

5. पुस्तकालय विधान एवं मॉडल सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम/बिल 24
   (Library Legislation and Model Public Library Acts/Bills)
6. भारतीय राज्यों में पुस्तकालय विनिमय : प्रमुख विशेषताएं 29
   (Library Legislation in Indian States : Their Salient Features)
7. सूचना संबंधी अन्य विनियम 39
   (Other Information Related Legislations)

संसाधनों का साझाकरण और पुस्तकालय नेटवर्क
(Resource Sharing and Library Networks)

8. संसाधनों का साझाकरण (Resource Sharing) 47
9. पुस्तकालय और सूचना नेटवर्क और संघ 51
   (Library and Information Networks and Consortia)
10. पुस्तकालय और सूचना नेटवर्क और संघ : राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय 55
   (Library and Information Networks and Consortia : National and International)

पुस्तकालय एवं सूचना व्यवसाय तथा सम्बद्ध अभिकरण
(Library and Information Profession and related Agencies)

11. एक व्यवसाय के रूप में पुस्तकालयाध्यक्ष का कार्य 69
   (Librarianship as a Profession)

12. लाइब्रेरियनशिप में नैतिक मुद्दे 76
(Ethical Issues in Librarianship)

13. व्यावसायिक संघों की भूमिका 82
(Role of Professional Associations)

14. पुस्तकालय और सूचना सेवाओं के विकास में सम्मिलित संगठन और संस्थान 91
(Organisations and Institutions Involved in the Development of Library and Information Services)

सूचना स्रोत और सेवा
(Information Sources and Services)

प्रलेखीय स्रोत
(Documentary Sources)

15. स्रोतों का संवर्गीकरण श्रेणीकरण/कोटिकरण 102
(Categorisation of Sources)

16. प्राथमिक स्रोत (Primary Sources) 109

17. द्वितीयक एवं तृतीयक स्रोत (Secondary and Tertiary Sources) 115

18. मूल्यांकन के मानदंड (Criteria of Evaluation) 123

अप्रलेखीय स्रोत
(Non-Documentary Sources)

19. सूचना स्रोतों के रूप में मानव 131
(Humans as Sources of Information)

20. सूचना के स्रोत के रूप में संस्थाएँ 137
(Institutions as Sources of Information)

21. सूचना के स्रोत के रूप में संचार माध्यम (मीडिया) 142
(Media as Sources of Information)

सूचना सेवाएँ
(Information Services)

22. सूचना सेवाएँ : एक अवलोकन 153
(Information Services: An Overview)

23. सेवाओं के प्रकार : संदर्भ सेवाएँ, कैस आदि 160
(Types of Services: Reference Services, CAS, etc.)

24. साहित्य खोज और डेटा सेवाएँ संरचना 167
(Literature Search and Database Services)

सूचना उपयोग और उपयोक्ता अध्ययन
(Information Use and User Studies)

25. उपयोक्ता शिक्षा और सूचना साक्षरता 173
(User Education and Information Literacy)

26. उपयोक्ता अध्ययन (User Studies) 181

27. सूचना उपयोग अध्ययन (Information Use Studies) 187

28. सूचना सेवाओं का विपणन 192
(Marketing of Information Services)

सूचना का आयोजन और प्रबंधन
(Organising and Managing Information)

पुस्तकालय वर्गीकरण
(Library Classification)

29. मूलभूत अवधारणाएँ (Basic Concepts) 198

30. वर्गीकरण के प्रकार (Types of Classification) 203

31. अभिधारणात्मक उपागम (Postulational Approach) 207

32. वर्गीकरण प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन 213
(Comparative Studies of Schemes of Classification)

पुस्तकालय सूचीकरण
(Library Catalogning)

33. मूल अवधारणा (Basic Concepts) 218

34. प्रसूचियों के स्वरूप और प्रकार 225
(Types and Forms of Catalogues)

35. संरूप और मानक 235
(Formats and Standards)

36. पुस्तकेतर सामग्री का प्रसूचीकरण....245
(Cataloguing of Non-Book Material)

अनुक्रमणन (Indexing)

37. विषय अनुक्रमण के मूल तत्व....252
(Basics of Subject Indexing)

38. अनुक्रमणन भाषाएं (Indexing Languages)....259

39. अनुक्रमणन तकनीकें (Indexing Techniques)....272

हाल ही का विकास
(Recent Development)

40. संकल्पनात्मक परिवर्तन : प्रौद्योगिकी के प्रभाव....284
(Conceptual Changes: Impact of Technology)

41. ऑनलाइन प्रसूची : अभिकल्प और सेवाएं....291
(Online Catalogue: Design and Services)

42. वेब अनुक्रमणीकरण मेटाडाटा अंत:क्रियाशीलता तथा सत्तामीमांसा का विहंगावलोकन....299
(Overview of Web Indexing, Metadata, Interoperability and Ontologies)

सूचना संचार प्रौद्योगिकी के मूल-तत्त्व
(ICT Fundamentals)

आईसीटी के मूल
(Basics of ICT)

43. कंप्यूटर तकनीकी के मूल आधार....304
(Basics of Computer Technology)

44. संचार प्रौद्योगिकी की मूल अवधारणाएँ....310
(Basics of Communication Technology)

45. नेटवर्क प्रौद्योगिकी की मूल अवधारणाएं....317
(Basics of Network Technology)

46. प्रौद्योगिकी अभिसरण (Technology Convergence)....326

मध्यस्थ प्रौद्योगिकियाँ
(Middleware Technologies)

47. कार्यालय उपकरण : वर्ड प्रोसेसिंग, प्रस्तुति और स्प्रैडशीट्स 331
(Office Tools: Word Processing, Presentation and Spreadsheets)

48. डेटाबेस प्रबंधन तंत्र 338
(Database Management Systems)

49. मल्टीमीडिया (Multimedia) 345

नेटवर्क मूल तत्व
(Network Fundamentals)

50. नेटवर्क टोपोलॉजी (Network Topology) 354

51. संचार प्रोटोकॉल और नेटवर्क एड्रेसिंग 362
(Communication Protocols and Network Addressing)

52. प्रोटोकॉल आर्किटेक्चर 371
(Protocol Architecture)

53. नेटवर्क अनुप्रयोग और प्रबंधन 376
(Network Applications and Management)

54. नेटवर्क सुरक्षा (Network Security) 382

इंटरनेट उपकरण और सेवाएँ
(Internet Tools and Services)

55. ई-मेल और ई मैसेजिंग (E-mail and E-Messaging) 390

56. वर्ल्ड वाइड वेब (World Wide Web) 396

57. सर्च इंजन (Search Engine) 402

58. इंटरएक्टिव और वितरण सेवाएं 407
(Interactive and Distributive Services)

COMMUNICATION SKILLS

COMMUNICATION FUNDAMENTALS

59. The Basics 412

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

60. Social Skills 417

61. Introducing the Institution 423

PREPARAING FOR JOB INTERVIEW

62. Your Profile 428

63. Preparing Your Portfolio 432

64. Preparing Your Resume/Curriculum Vitae 436

65. The Job Interview 439

WORKPLACE SKILLS

66. Presentation Skills 443

67. Telephone Skills 448

68. Group Discussions 455

69. Body Language 459

THE WRITING SKILLS

70. The Writing Skill: Some Basic Guidelines 463

71. Internal Correspondence at the Workplace 469

72. External Correspondence at the Workplace 478

ADVANCED WRITING SKILLS

73. Basic Features of Proposals 487

74. Writing Reports 495

75. Questionnaire Method 501

पुस्तकालय और सूचना केंद्र का प्रबंधन
(Management of Library and Information Centre)

प्रबंधन के सिद्धांत और व्यवहार
(Principles and Practices of Management)

76. प्रबंधन के सिद्धांत और कार्य 507
(Principles and Functions of Management)

77. सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन 514
(Total Quality Management)

78. परिवर्तन प्रबंधन 518
(Change Management)

79. पुस्तकालय और सूचना केंद्रों में प्रबंधन के सिद्धांतों का अनुप्रयोग 524
(Application of Principles of Management in Library and Information Centres)

पुस्तकालय कार्य और संचालन
(Library Functions and Operation)

80. बुनियादी परिग्रहण संचालन भाग–1 529
(Basic Housekeeping Operation Part - 1)

81. बुनियादी परिग्रहण संचालन भाग–2 538
(Basic Housekeeping Operations Part-2)

82. भौतिक आधारभूत संरचना योजना 548
(Physical Infrastructure Planning)

83. रखरखाव और संरक्षण 554
(Maintenance and Preservation)

84. आपदा प्रबंधन 564
(Disaster Management)

वित्तीय प्रबंधन
(Financial Management)

85. वित्त और संसाधन जुटाने के स्रोत 569
(Source of Finance and Resource Mobilisation)

86. बजट की तकनीकें 574
(Budgeting Techniques)

87. बजट तैयारी 579
(Budget Preparation)

88. मानव संसाधन प्रबंधन की मूल बातें 585
(Basics of Human Resource Management)

89. मानव संसाधन योजना 592
(Human Resource Planning)

90. मानव संसाधन विकास 598
(Human Resource Develoment)

प्रलेख प्रसंस्करण : अभ्यास
(Document Processing: Practice)

वर्गीकरण : डीडीसी-19वाँ संस्करण
(Classification – DDC: 19th Edition)

91. परिचय, संरचना और संगठन 605
(Introduction, Structure and Organisation)

92. परिभाषा, नोट्स और निर्देश 610
(Definition, Notes and Instructions)

93. तीन सारांशों का परिचय और प्रलेखों को वर्गीकृत करने के चरण 613
(Introduction to Three Summaries and Steps in Classifying Documents)

94. सापेक्ष सूचकांक और इसका उपयोग 616
(Relative Index and Its Use)

95. तालिकाओं और अनुसूचियों का अध्ययन 619
(Study of Tables and Schedules)

96. सहायक तालिका और उपकरण 631
(Auxiliary Tables and Devices)

97. व्यावहारिक वर्गीकरण 645
(Practical Classification)

कैटलॉगिंग – एएसीआर और मार्क 21
(Cataloguing – AACR II and MARC 21)

98. एएसीआर-2 आर : प्रारंभिक 650
(AACR-2R: Preliminaries)

99. शीर्षकों का चयन तथा प्रतिपादन और उत्तरदायी कथन 657
(Choice and Rendering of Headings and Statement of Responsibility)

100. मल्टी-वॉल्यूम, सीरियल प्रकाशनों और नॉन-प्रिंट मीडिया को सूचीबद्ध करना 667
(Cataloguing Multi-Volumes, Serial Publications and Non-Print Media)

101. मार्क-21 कैटलॉगिंग 672
(Marc-21 Cataloguing)

अनुक्रमण – विषय शीर्षक की सीअर्स सूची
(Indexing – Sears List of Subject Heading)

102. विषय शीर्षक (18वें संस्करण) की सीअर्स सूची की संरचना 678
(Structure of Sears List of Subject Headings (18th Edition))

103. कीवर्ड इंडेक्सिंग 681
(Keyword Indexing)

104. श्रृंखला अनुक्रमण (डीडीसी-19वां संस्करण) 685
(Chain Indexing (DDC-19th Edition)

सूचना उत्पाद एवं सेवाएं
(Information Products and Services)

परंपरागत उत्पाद एवं सेवाएं
(Conventional Products and Services)

105. साहित्य खोज और ग्रंथसूची 689
(Literature Search and Bibliographic Services)

106. वर्तमान जागरूकता सेवाएं (एसडीआई और सतर्कता सेवाओं सहित) 696
(Current Awareness Services–Jneluding SDI and Alerting Services)

107. सार, डाइजेस्ट और समाचार पत्र कतरन सेवाएं 701
(Abstract, Digest and Newspaper Clipping Services)

108. संदर्भ सेवा (Referral Service) 706

विशेष उत्पाद एवं सेवाएं
(Special Products and Services)

109. सूचना विश्लेषण 711
(Information Analysis)

110. सूचना समेकन और पुनः जानकारी 717
(Information Consolidation and Repackaging)

111. सूचना विश्लेषण और समेकन उत्पाद 724
(Information Analysis and Consolidation Products)

प्रलेख वितरण सेवा
(Document Delivery Service)

112. प्रलेख वितरण सेवा : एक सिंहावलोकन 730
(Document Delivery Service: An Overview)

113. इलेक्ट्रॉनिक प्रलेख वितरण सेवा 735
(Electronic Document Delivery Service)

114. अनुवाद सेवा (Translation Service) 740

वेब उत्पाद एवं सेवाएं
(Web Products and Services)

115. वेब शेयरिंग (Web Sharing) 746

116. सहयोगात्मक सामग्री विकास 753
(Collaborative Content Development)

117. वेब मार्केटिंग (Web Marketing) 760

पुस्तकालय में सूचना और कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी
(ICT in Libraries)

पुस्तकालयों का स्वचालन
(Library Automation)

118. लाइब्रेरी स्वचालन का परिचय 766
(Introduction to Library Automotion)

119. पुस्तकालय स्वचालन प्रक्रियाएँ 781
(Library Automation Processes)

120. लाइब्रेरी ऑटोमेशन-सॉफ्टवेयर पैकेज 793
(Library Automation–Software Packages)

121. पुस्तकालय-ऑटोमेशन-ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर का अनुप्रयोग 811
(Library Automation–Application of Open Source Software)

डिजिटाइजेशन और डिजिटल पुस्तकालय–डीस्पेस और जीएसडीएल
(Digitisation and Digital Libraries - DSpace and GSDL)

122. डिजिटल पुस्तकालय का परिचय.....820
(Introduction to Digital Library)

123. डिजिटलीकरण प्रक्रिया (Digitisation Process).....825

124. डीस्पेस का उपयोग करते हुए डिजिटल पुस्तकालयों का निर्माण करना.....832
(Creating Digital Libraries Using DSpace)

125. जीएसडीएल का उपयोग करते हुए डिजिटल पुस्तकालयों का निर्माण करना.....840
(Creating Digital Libraries Using GSDL)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

पुस्तकालय, सूचना और समाज
(Library, Information and Society)

B.L.I.-221

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 70*

नोट : *प्रश्न पत्र दो भागों में विभाजित है। दिए गए निर्देशों के अनुसार दोनों भागों को हल कीजिए। जहाँ कहीं आवश्यक हो उपयुक्त उदाहरणों और आरेखों से अपने उत्तर को स्पष्ट कीजिए। उत्तर लिखने से पूर्व संबंधित प्रश्न संख्या अवश्य लिखिए।*

भाग - I

नोटः निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. 'विशिष्ट पुस्तकालय' को परिभाषित कीजिए। समाज में इसकी भूमिका की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-7, 'विशेष पुस्तकालय', पृष्ठ-10, प्रश्न 6

प्रश्न 2. पुस्तकालय विज्ञान के पाँच सूत्रों का उल्लेख कीजिए। पुस्तकालय विज्ञान के चौथे सूत्र के निहितार्थ की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-18, 'पुस्तकालय विज्ञान के पाँच विनियम'

प्रश्न 3. आन्ध्र प्रदेश सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम, 1960 की मुख्य विशेषताओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-30, 'आंध्र प्रदेश सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम, 1960', पृष्ठ-36, प्रश्न 2

प्रश्न 4. 'पुस्तकालय नेटवर्क' को परिभाषित कीजिए। ओ.सी.एल.सी. की सेवाओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-62, 'पुस्तकालय नेटवर्क : अंतर्राष्ट्रीय'

प्रश्न 5. 'सिलिप' की गतिविधियों एवं सेवाओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-86, 'पुस्तकालय और सूचना व्यावसायिकों के लिए अधिकृत संस्थान (चार्टर्ड इंस्टीट्यूट ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन प्रोफेशनल्स–(ILIP)'

प्रश्न 6. संसाधन सहभागिता को परिभाषित कीजिए। साझा किए जाने वाले प्रलेखों के प्रकार को निर्धारित करने में विचार किए जाने वाले कारकों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-47, 'संसाधनों का साझाकरण', पृष्ठ-48, 'संसाधन साझाकरण : कार्यान्वयन संबंधी मुद्दे'

भाग-II

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं छः पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए।

प्रश्न 7. संकर पुस्तकालय

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-8, 'हाइब्रिड लाइब्रेरी', पृष्ठ-11, प्रश्न 10

प्रश्न 8. डाटा केन्द्र

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-13, 'प्रलेखन केन्द्र', पृष्ठ-14, 'डेटा केन्द्र'

प्रश्न 9. आचार संहिता

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-76, 'आचार संहिता'

प्रश्न 10. संदर्भ पुस्तकालय

उत्तर–संदर्भ पुस्तकालय, पुस्तकों का एक संग्रह होता है, जिसमें कई तरह की संदर्भ सामग्री उपलब्ध होती है। इसमें शब्दकोश, विश्वकोश, डायरेक्टरी, जीवनी स्रोत, ग्रंथसूची, पंचांग, वर्ष-पुस्तकें, भौगोलिक स्रोत, गजेटियर, गाइड-बुक, मानचित्र, एटलस वगैरह जैसी सामग्री होती है। संदर्भ पुस्तकालय में पाठकों को पुस्तकें पढ़ने की अनुमति होती है, लेकिन उन्हें बाहर ले जाने की अनुमति नहीं होती। संदर्भ पुस्तकालय में उपलब्ध सामग्री से पाठकों को कई तरह की मदद मिलती है, जैसे कि शिक्षा और

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

प्रशिक्षण, वोकेशनल स्टडी और गाइडेंस, शैक्षिक संस्थाओं में प्रवेश, रोजगार।

संदर्भ पुस्तकालय में काम करने वाले ग्रंथालयी को प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिए और उन्हें पारंपरिक और आधुनिक तकनीक का ज्ञान होना चाहिए। संदर्भ सेवा से जुड़ी जानकारी पाने के लिए रंगनाथन ने कहा है कि यह एक व्यक्तिगत सेवा है, जो पाठक को उसकी रुचि के मुताबिक, सटीक, विस्तृत और जल्दी से दस्तावेज खोजने में मदद करती है।

अधिक विशिष्ट रूप से कहें तो, संदर्भ पुस्तक वह पुस्तक है, जिसका उपयोग विशिष्ट मामलों के लिए किया जाता है। इसमें उपयोगी या विशेष रूप से व्यवस्थित जानकारी होती है। उदाहरणों में विश्वकोश, शब्दकोश, पंचांग और एटलस शामिल हैं।

प्रश्न 11. आई.एल.ए. की गतिविधियाँ

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-88, प्रश्न 3

प्रश्न 12. पुस्तकालय नेटवर्किंग

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-62, 'पुस्तकालय नेटवर्क : अंतर्राष्ट्रीय'

प्रश्न 13. 'केलिबनेट' की सेवाएँ

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-58, 'कलकत्ता लाइब्रेरी नेटवर्क (CALIBNET)'

प्रश्न 14. आई.टी. अधिनियम, 2000

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-42, 'सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

पुस्तकालय, सूचना और समाज
(Library, Information and Society)

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में पुस्तकालय और सूचना
(Library and Information in Social Perspective)

पुस्तकालय, सूचना एवं ज्ञान-आधारित समाज
(Libraries, Information and Knowledge Based Sociey)

1

परिचय

ज्ञान और सूचना सर्वांगीण मानव विकास के लिए महत्त्वपूर्ण हैं और पुस्तकालय इस ज्ञान निधि को संचित करने के सामाजिक साधन हैं, अत: पुस्तकालय अमूल्य हैं। पुस्तकालय औपचारिक और गैर-औपचारिक अधिगम शिक्षण प्रक्रिया, अनुसंधान और विकास, सांस्कृतिक गतिविधियों, आध्यात्मिक और वैचारिक क्षेत्रों, मनोरंजन आदि से संबंधित ज्ञानवृद्धि में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी में निरंतर एवं तीव्र गति से विश्व स्तरीय प्रगति के कारण और उपयोगकर्ताओं की बढ़ती श्रेणियों और विभिन्न स्थितियों में उनकी आवश्यकताओं की जरूरतों को देखते हुए आधुनिक समाज एक सूचना समाज की ओर बढ़ रहा है, जिसमें परिवर्तन, बल और दिशा परिवर्तन का केंद्रीय साधन ज्ञान और सूचना है।

अध्याय का विहंगावलोकन

आधुनिक समाज : प्रमुख विशेषताएं

तकनीकी प्रगति और उन्नति आधुनिक समाज की विशेषता है। संचार के आधुनिक साधनों से संचार बहुत सरल हो गया है और लोग अब अपने विकास के बारे में अधिक जागरूक हैं। सभी मनुष्य एक सुसंस्कृत, समृद्ध और विकसित जीवन जीना चाहते हैं। समृद्ध और सुसंस्कृत जीवन में बुनियादी मूल्यों के विकास और उनका पालन करने पर बल दिया जाता है। अत: इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उपयुक्त व्यवस्था करना समाज के सदस्यों का कर्त्तव्य है। शिक्षण और प्रशिक्षण के लिए अनेक शैक्षिक और अनुसंधान संस्थान स्थापित किए गए हैं। इन सभी संस्थानों में छात्रों और शिक्षकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए पुस्तकालय स्थापित किए जाते जाते हैं।

समाज में पुस्तकालयों की भूमिका

ब्रॉफी के अनुसार पुस्तकालय निम्नलिखित भूमिकाएं निभाते हैं–

1. संसाधनों के संग्रह के रूप में,
2. संसाधनों को साझा करने के एक संगठन के रूप में,
3. सेवा प्रदाता के रूप में,
4. सूचना प्रौद्योगिकी और उपयोगकर्त्ता के बीच की कड़ी के रूप में।

पुस्तकालय प्रयोगकर्त्ताओं और उपलब्ध बड़ी मात्रा में प्रकाशित और अप्रकाशित जानकारी के बीच का अंतराफलक हैं। पुस्तकालय अधिगम की सुविधा और साधन प्रदान करते हैं। पुस्तकालयों के प्रतिमान बदल रहे हैं। अब ये किताबों के संरक्षक से लेकर सेवा प्रदाता, सूचना प्रदाता, मल्टीमीडिया माध्यम प्रदाता, तकनीकी संग्रहकर्त्ता, अंत:स्रोत से बाह्यस्रोत और स्थानीय पहुंच से वैश्विक पहुंच तक अपना रहा है। अब घर बैठे पुस्तकालय तक आपकी पहुँच है।

कुछ विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि तकनीकी विकास और तुरंत जानकारी की मांग के कारण पुस्तकालयों का अस्तित्व खतरे में है।

सूचना और समाज पर इसका प्रभाव

सूचना ने समाज में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने राजनीति, अर्थव्यवस्था और संस्कृति को प्रभावित किया है, क्योंकि हमें अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में और कर्त्तव्यों के दैनिक निर्वहन में जानकारी की आवश्यकता होती है। सूचना का प्रभाव शिक्षा, अनुसंधान और विकास जैसी अनेक मानवीय गतिविधियों पर देखा जा सकता है। कृषि समाज से औद्योगिक और औद्योगिक से औद्योगिक के बाद के समाज के परिवर्तन में सूचना महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सूचना समाज

सूचना समाज सूचना द्वारा वर्तमान समाज में हुए उन परिवर्तनों का वर्णन करता है, क्योंकि आज का समाज सूचना पर बहुत अधिक निर्भर करता है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

सूचना समाज : संकल्पना का विकास

1970 के दशक में पहली बार सूचना समाज की संकल्पना का उपयोग किया गया था। इसने 1980 के दशक में लोकप्रियता हासिल की। विद्वानों, लेखकों और शिक्षाविदों द्वारा इसका उपयोग किया गया है। पेशेवरों, वैज्ञानिक और तकनीकी समूह के उद्‌भव और कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी की शुरुआत ने सूचना समाज के विकास को प्रेरित किया है।

मसुदा, स्टोनियर और नाइस्बिट के लेखन एक नए तरह के समाज को प्रस्तुत करते हैं अर्थात एक तकनीकी आदर्श समाज की कल्पना (यूटोपियनवाद)। टॉफलर ने तर्क दिया कि अमेरिका 1960 और 1970 के दशक में औद्योगिक समाज से सूचना समाज में बदल गया। इसमें कम्प्यूटर ने एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। टॉफलर ने कहा कि सूचना के कारण समाज में एक शक्तिशाली बदलाव होगा और समाज ज्ञान पर अधिक निर्भर करेगा।

सूचना समाज की परिभाषा और अर्थ

ब्रैंसकॉम्ब ने सूचना समाज को एक ऐसे समाज के रूप में परिभाषित किया है, जहां अधिकांश लोग सूचनाओं के निर्माण, एकत्रण, भंडारण, प्रसंस्करण या वितरण में लगे हुए हैं।

मैनफ्रेड कोचन का कहना है कि समाज में अधिकांश सदस्य ज्ञान आधारित प्रक्रियाओं द्वारा ज्ञान उत्पन्न करते हैं, जिसे ज्ञान-प्रखरता कह सकते हैं। वे कहते हैं कि सूचना बुनियादी सामाजिक रूपों को दर्शाती है। ऐसे समाज में तर्क और मानवीय मूल्यों को महत्व दिया जाता है।

जेम्स मार्टिन का कहना है कि सूचना समाज एक उन्नत औद्योगिक स्तर पर समाजों का प्रतिनिधित्व करता है। यह कम्प्यूटरीकरण के उच्च स्तर और बड़ी मात्रा में आंकड़ों के हस्तांतरण (डेटा ट्रांसमिशन) की विशेषता है तथा अर्थव्यवस्था सूचना प्रौद्योगिकी से प्रभावित है।

सूचना समाज के आगमन के निर्धारक कारक

सूचना समाज का निर्माण बड़े पैमाने पर डेटा विस्फोट, बढ़ती सूचना चेतना और कम्प्यूटिंग तथा संचार प्रौद्योगिकी में बड़े पैमाने पर समाज की निर्भरता से हुआ है। कोकेल का कहना है कि दूरसंचार आधारित सूचना सेवा अवसंरचना एक सूचना समाज की प्राथमिक आवश्यकता है।

सूचना समाज की विभिन्न धारणाएँ

वेबस्टर के अनुसार सूचना समाज निम्नलिखित अवधारणाओं पर आधारित है–

(i) **तकनीकी अनुभूति**–इससे समाज के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के संभावित लाभों पर ध्यान आकर्षित होता है।

(ii) **आर्थिक धारणा**–एक सूचना समाज की प्रमुख विशेषता उसकी अर्थव्यवस्था की प्रकृति है।

(iii) **व्यावसायिक धारणा**–सूचना समाज से भी व्यावसायिक परिवर्तन होता है। सूचना तकनीकी के क्षेत्र ने शिक्षकों, शोधकर्त्ताओं और अन्य पेशेवरों के लिए रास्ते खोल दिए हैं।

(iv) **स्थानिक धारणा**–दुनिया भर में विभिन्न स्थानों और क्षेत्रों को जोड़ने के लिए नेटवर्किंग इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण है।

(v) **सांस्कृतिक धारणा**–सभी प्रकार के विकास का हमारे जीवन और संस्कृति पर प्रभाव पड़ता है। सूचना क्षेत्र ने हमारी संस्कृति और हमारी परंपरा को भी प्रभावित किया।

(vi) **सूचना समाज पर संयुक्त राष्ट्र विश्व शिखर सम्मेलन**–10-12 दिसंबर, 2003 को जिनेवा में आयोजित शिखर सम्मेलन का उद्देश्य सूचना समाज के बारे में एक सामान्य दृष्टि विकसित करना था। शिखरवार्ता आर्थिक विकास को चलाने के लिए सूचना समाज और मानव विकास की प्रक्रिया को तेज करने में मदद करने के दो दृष्टिकोणों के साथ समाप्त हुई।

(vii) **वैकल्पिक परिभाषाएं या प्रस्ताव**–तकनीकी क्रांतियों ने विचारों को जन्म दिया है कि सूचना सार्वजनिक वस्तु है, न कि वस्तु का अंग।

ज्ञान समाज

ज्ञान समाजों में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षिक आयाम सम्मिलित हैं। यह होने वाले परिवर्तनों की जटिलता और गतिशीलता को समझने में सक्षम है। इस प्रकार यह सूचना समाज के लिए उपयोगी है।

ज्ञान समाज की परिभाषा

ज्ञान समाज ज्ञान पर आधारित समाज है, जो आर्थिक विकास और रोजगार के मुख्य संसाधन के रूप में ज्ञान समाज की विकास प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ज्ञान समाज में एकाधिकार(Patent), अनुसंधान और विकास, ज्ञान श्रमिकों की उपलब्धता के मापदंड, पारंपरिक श्रम लागत, ज्ञान संरक्षण और बुनियादी ढांचे की अपेक्षा प्रतिस्पर्धात्मक हैं।

ज्ञान समाज की विशेषताएँ

ज्ञान समाज में निम्नलिखित तत्त्व हैं–

(i) सभी क्षेत्रों में नव निर्मित ज्ञान का विस्तार हो रहा है।

(ii) ज्ञान किसी व्यक्ति से नहीं बल्कि समाज से जुड़ा होता है।

ज्ञान समाज में सभी लोगों के पास सूचना और ज्ञान की खुली और समय पर पूर्णतः पहुँच होती है; जानकारी पाने और व्याख्या करने की पूरी तरह से क्षमता होती है। लोगों के पास ज्ञान और निर्णय लेने के उपयोग के अवसर और अवसर भी होते हैं।

ज्ञान आधारित समाज की स्थापना

ज्ञान आधारित समाज की स्थापना करना ऐच्छिक कदम है। ज्ञान आधारित समाज की स्थापना के लिए सरकार की राजनीतिक इच्छाशक्ति भी आवश्यक है। ऐसे समाज के विकास हेतु सुशिक्षित और कुशल कार्यबल की आवश्यकता होती है।

ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था (KBE)

ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में ज्ञान एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है। ज्ञान के विभिन्न प्रकार हैं–क्या जानना है, क्यों जानना है, कैसे जानना है और किसको जानना है।

ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था ज्ञान आधारित सामग्री, ज्ञान का भण्डारण और प्रवाह, ज्ञान उत्पादन, ज्ञान नेटवर्क, ज्ञान और अधिगम को मापने के लिए जरूरी है।

विकासशील देश

ज्ञान समाज में ज्ञान पूँजी निर्माण की आधारशिला रहा है। बौद्धिक पूंजी में तीन प्राथमिक प्रकार की पूँजी शामिल हैं–मानव पूंजी, संरचनात्मक पूंजी और ग्राहक पूंजी। मानव पूंजी सबसे महत्त्वपूर्ण है और विकासशील

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

देशों को मानव पूंजी और ज्ञान निर्माण के विकास पर बल देना चाहिए। ज्ञान सामाजिक समानता की ओर ले जाता है। यह विकासशील देशों को मजबूत अर्थव्यवस्थाओं के रूप में उभरने और उत्पादकता और आय में सुधार करने वाले सस्ते श्रम से स्वतंत्र होने में सक्षम बना सकता है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. आधुनिक समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने में पुस्तकालयों और सूचना की भूमिका की व्याख्या करें।

उत्तर–पुस्तकालय पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं में संचित सूचना/ज्ञान को इकट्ठा, भंडरण, प्रक्रिया, व्यवस्थित, प्रसारित और वितरित करते हैं। चूँकि ज्ञान और सूचना सभी चौतरफा मानव विकास महत्त्वपूर्ण है, अत: ज्ञान और सूचना के प्रबंधन और संरक्षण के लिए पुस्तकालय और अन्य संस्थान वास्तव में अमूल्य है। पुस्तकालय औपचारिक और गैर-औपचारिक शिक्षा की शैक्षिक प्रक्रिया, अनुसंधान और विकास, सांस्कृतिक गतिविधियों, आध्यात्मिक और वैचारिक क्षेत्रों, मनोरंजन आदि में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। की तीव्र और निरंतर उपयोगकर्त्ताओं की बढ़ती श्रेणियों और उनकी सूचना की बढती आवश्यकता के कारण सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवीनतम और तीव्र वृद्धि जरूरी है। आधुनिक समाज सूचना समाज की ओर बढ़ रहा है, जिसमें परिवर्तन, बल और परिवर्तन की दिशा का केंद्रीय साधन ज्ञान और सूचना है।

प्रश्न 2. साहित्य के वैचारिक विश्लेषण में परिलक्षित सूचना समाज की अवधारणा का सार संक्षेप में बताएं।

उत्तर–वेबस्टर ने सूचना समाज के बारे में पाँच धारणाएं बताई हैं–तकनीकी धारणा, आर्थिक धारणा, व्यावसायिक धारणा, स्थानिक धारणा और सांस्कृतिक धारणा।

***(i)* तकनीकी धारणा**–प्रौद्योगिकी के विकास का समाज के सभी क्षेत्रों को लाभ मिला है। मुख्य रूप से सूचना प्रसंस्करण और भंडारण और ट्रांसमिशन में विकास से अधिक दक्षता और उत्पादकता बढ़ी है। तकनीकी दृष्टिकोण समाज के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के संभावित लाभों पर प्रभावी रूप से ध्यान आकर्षित करता है।

***(ii)* आर्थिक धारणा**–सूचना समाज की प्रमुख विशेषता उसकी अर्थव्यवस्था की प्रकृति है। सूचना प्रौद्योगिकी से विकसित देशों में सेवा क्षेत्र के विकास और विनिर्माण क्षेत्रों में रोजगार में गिरावट आई है। माचुप (Machulp) जैसे लेखकों ने निष्कर्ष निकाला है कि ज्ञान उद्योग का क्षेत्र औद्योगिक क्षेत्र को पछाड़ देगा।

***(iii)* व्यावसायिक धारणा**–सूचना समाज व्यावसायिक परिवर्तनों का भी कारण है। आईटी क्षेत्र से शिक्षकों, शोधकर्त्ताओं और अन्य पेशेवरों के लिए अनेक नए रास्ते खुल गए हैं। इसने व्यवसाय के वितरण में भी बदलाव किया है।

***(iv)* स्थानिक धारणा**–सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व के विभिन्न स्थानों और क्षेत्रों को जोड़ने के लिए नेटवर्किंग महत्त्वपूर्ण है। सूचना प्रौद्योगिकी ने दुनिया को जोड़ा है। इसने प्रत्येक वस्तु के वैश्वीकरण में मदद की है। अब हम हर सेकंड में दुनिया के सभी हिस्सों के लोगों से जुड़ सकते हैं।

***(v)* सांस्कृतिक धारणा**–सभी प्रकार के विकास का हमारे जीवन और संस्कृति पर प्रभाव पड़ता है। सूचना प्रौद्योगिकी ने हमारी संस्कृति और हमारी परंपरा को भी प्रभावित किया है। अब हम अपने और दूसरों के बारे में कम्प्यूटर और मोबाइल द्वारा एस.एम.एस., ई-मेल, व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर आदि से संदेश प्राप्त करते हैं और भेजते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के कारण ही यह संभव हो पाया है।

प्रश्न 3. सूचना समाज की विशेषताएं बताइए।

उत्तर–सूचना समाज में अधिकांश लोग सूचना का निर्माण करने, एकत्र करने, भंडारण, प्रसंस्करण या वितरण में लगे होते हैं। समाज में अधिकांश सदस्य ज्ञान-गहनता द्वारा ज्ञान आधारित प्रक्रियाओं को अपनाकर ज्ञान उत्पन्न करते हैं। सूचना समाज के बुनियादी रूप को दर्शाती है। सूचना समाज में तर्क और मानवीय मूल्यों को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

जेम्स मार्टिन का कहना है कि सूचना समाज एक उन्नत औद्योगिक स्तर पर समाजों का प्रतिनिधित्व करने के लिए अस्तित्व में आया है। सूचना प्रौद्योगिकी से कम्प्यूटरीकरण का उच्च स्तर, बड़ी मात्रा में डेटा ट्रांसमिशन और अर्थव्यवस्था से प्रभावित हुए हैं।

सूचना समाज का निर्माण बड़े पैमाने पर आंकड़ों का निर्माण और एकत्रण, बढ़ती सूचना चेतना और कम्प्यूटिंग और संचार प्रौद्योगिकी में बड़े पैमाने पर समाज की निर्भरता से होता है। दूरसंचार आधारित सूचना सेवा अवसंरचना एक सूचना समाज की बुनियादी आवश्यकता है।

प्रश्न 4. सूचना समाज के आर्थिक निहितार्थ क्या हैं?

उत्तर–सूचना समाज का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है। क्या, कैसे, क्यों और कौन जैसे प्रश्नों का उत्तर ज्ञान के विभिन्न प्रकारों को दर्शाते हैं। पीटर ड्रकर ने तर्क दिया है कि भौतिक वस्तुओं पर आधारित अर्थव्यवस्था का ज्ञान आधारित समाज से संक्रमण होता है। मार्क पोराट एक प्राथमिक (सूचना के उत्पादन, वितरण या प्रसंस्करण में सीधे ही सूचना वस्तुओं और सेवाओं को उपयोग करना) और एक द्वितीयक क्षेत्र (सूचना सरकारी और गैर-सरकारी फर्मों द्वारा आंतरिक उपयोग के लिए सूचना सेवाओं का उत्पादन) में अंतर बताते हैं।

पोरट कुल राष्ट्रीय उत्पादन में सूचना अर्थव्यवस्था के लिए एक संकेतक के रूप में प्राथमिक और माध्यमिक सूचना क्षेत्र द्वारा दिए गए कुल योगदान की महत्ता प्रतिपादित करता है। ओईसीडी ने पोराट की परिभाषा को कुल अर्थव्यवस्था में सूचना अर्थव्यवस्था की हिस्सेदारी की गणना के लिए अपनाया है (उदाहरण के लिए ओईसीडी 1981, 1986)। ऐसे संकेतकों के आधार पर सूचना समाज को एक ऐसे समाज के रूप में परिभाषित किया गया है, जहां कुल राष्ट्रीय उत्पादन का आधे से अधिक उत्पादन होता है और आधे से अधिक कर्मचारी सूचना अर्थव्यवस्था में सक्रिय हैं।

डैनियल बेल के लिए सेवाओं और जानकारी का उत्पादन करने वाले कर्मचारियों की संख्या समाज के सूचनात्मक चरित्र के लिए एक संकेतक है। "एक उत्तर-औद्योगिक समाज सेवाओं पर आधारित है, जो शारीरिक शक्ति और ऊर्जा पर आधारित न होकर सूचना पर आधारित है। शक्ति, या ऊर्जा, लेकिन जानकारी नहीं है। एक उत्तर-औद्योगिक समाज वह है, जिसमें कार्यरत लोगों में से अधिकांश भौतिक वस्तुओं के उत्पादन में शामिल नहीं होते हैं।''

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

जीन फ्रांस्वा लियोटार्ड ने तर्क दिया है, ''पिछले कुछ दशकों में ज्ञान उत्पादन क्षमता का प्रमुख सिद्धांत बन गया है।'' इसमें ज्ञान एक पूर्ण वस्तु में परिवर्तित हो जाएगा। लियोटार्ड का कहना है कि उत्तर-औद्योगिक समाज ने ज्ञान को समाज के साधारण व्यक्ति के लिए भी सुलभ बना दिया है, क्योंकि ज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी ने समाज में समाज के सबसे नीचे के व्यक्ति तक जाकर केंद्रीकृत संरचनाओं और समूहों की मूल मान्यताओं को तोड़ा है। लियोटार्ड इन बदलती परिस्थितियों को उत्तर आधुनिक स्थिति या उत्तर आधुनिक समाज के रूप में दर्शाता है।

प्रश्न 5. ज्ञान समाज की महत्त्वपूर्ण लक्षणों और विशेषताओं पर चर्चा करें।

उत्तर–ज्ञान समाज की निम्नलिखित विशेषताएं हैं–

(i) सभी क्षेत्रों में नव निर्मित ज्ञान का विस्तार समय के साथ होता है।

(ii) ज्ञान केवल किसी व्यक्ति से न जुड़ा होकर समाज से जुड़ा होता है। समाज में ज्ञान के विकास से सभी लोग लाभान्वित होते हैं।

(iii) ज्ञान समाज में सभी लोगों के पास सूचना और ज्ञान की खुली और समय पर पूरी तरह से पहुँच के साथ सूचना गहनता और व्याख्या करने की क्षमता होती है।

(iv) लोगों के पास ज्ञान के उपयोग और निर्णय निर्माण के अवसर और अवसर भी होते हैं। ऐसे समाज में ज्ञान के उपयोग पर किसी पर कोई भी प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता है।

प्रश्न 6. ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था के लिए महत्त्वपूर्ण विभिन्न प्रकार के ज्ञान की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण ज्ञान के प्रकार हैं–क्या जानना है, क्यों जानना है, कैसे जानना है और किसे जानना है।

ज्ञान के अन्य प्रकार हैं–

***(i)* तकनीकी ज्ञान**–ज्ञान का तकनीकी परिप्रेक्ष्य समाज के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के संभावित लाभों की ओर प्रभावी रूप से ध्यान आकर्षित करता है।

***(ii)* आर्थिक ज्ञान**–एक सूचना समाज की प्रमुख विशेषता उसकी अर्थव्यवस्था की प्रकृति है। आर्थिक गतिविधियाँ आर्थिक ज्ञान पर निर्भर होती हैं।

***(iii)* व्यावसायिक ज्ञान**–सूचना समाज के लिए व्यावसायिक ज्ञान आवश्यक है।

***(iv)* सांस्कृतिक ज्ञान**–सभी प्रकार के विकास का हमारे जीवन और संस्कृति पर प्रभाव पड़ता है। सूचना क्षेत्र ने हमारी संस्कृति और हमारी परंपरा को भी प्रभावित किया है।

प्रश्न 7. 'ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था' शब्द का क्या अर्थ स्पष्ट करें और कुछ महत्त्वपूर्ण संकेतकों पर चर्चा करें, जो 'ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था' को मापने में मदद करते हैं।

उत्तर–ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में ज्ञान महत्त्वपूर्ण संसाधन है। ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के मापन में ज्ञान आधारित सामग्री, ज्ञान भण्डारण और प्रवाह, ज्ञान उत्पादन, ज्ञान नेटवर्क की आवश्यकता होती है। एक ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था को एक ऐसी अर्थव्यवस्था के रूप में परिभाषित किया गया है जो ज्ञान उत्पादन, प्रसार और उपयोग में सक्षम है; जहां वृद्धि, पूँजी निर्माण और रोजगार का एक महत्त्वपूर्ण कारक ज्ञान है और मानव पूंजी सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) पर निर्भरता के संबल रूप में रचनात्मकता नवाचार और नए विचारों की पीढ़ी की चालक होती है। 'ज्ञान समाज' और 'ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था' के बीच एक सकारात्मक सहसंबंध और पारस्परिक संचार होता है। साथ ही इक्कीसवीं सदी में देशों की प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने के लिए 'ज्ञान' एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है। ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था नवाचार के माध्यम से नए उत्पादों और सेवाओं के निर्माण के लिए ज्ञान प्रणाली के उत्पादन के उपयोग पर आधारित है। हालांकि, ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स के अनुसार यूनाइटेड किंगडम में नवाचार अभी भी एक महत्त्वपूर्ण चुनौती है, उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय उद्योगों ने पिछले तीन दशकों में काफी विकास किया है और अब ज्ञान के मजबूत आधार हैं, जिस पर नई अर्थव्यवस्था विशेष रूप से राष्ट्रीय औद्योगिक रणनीति को अपनाने के साथ, नई अर्थव्यवस्था को जोड़ना है।

प्रश्न 8. विकासशील देशों द्वारा ज्ञान समाज और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की दिशा में प्रगति के लिए उठाए जाने वाले कदमों पर चर्चा करें।

उत्तर–20 वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में वैश्विक विकास प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ आया है। आज की दुनिया में ज्ञान सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का इंजन बन गया है। ज्ञान-गहनता आधारित आर्थिक गतिविधियां अब अग्रणी देशों में सामरिक महत्व के उत्पादन का कारक बन गई हैं। वे 21 वीं सदी में आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के लिए विकास के स्तर और हर देश की तत्परता का मुख्य संकेतक भी बन गई हैं। ज्ञान समाज में ज्ञान पूँजी निर्माण की आधारशिला है। बौद्धिक पूंजी में तीन प्राथमिक प्रकार की पूँजी शामिल हैं–मानव पूंजी, संरचनात्मक पूंजी और ग्राहक पूंजी। मानव पूंजी सबसे महत्त्वपूर्ण है और विकासशील देशों को मानव पूंजी और ज्ञान निर्माण के विकास पर जोर देने की आवश्यकता है। ज्ञान सामाजिक समानता की ओर ले जाता है। यह विकासशील देशों को मजबूत अर्थव्यवस्थाओं के रूप में उभरने और उत्पादकता व आय में सुधार करने वाले सस्ते श्रम से स्वतंत्र होने में सक्षम बनाता है। सूचना और ज्ञान के उत्पादन और उपयोग से जुड़ी आर्थिक गतिविधियां विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक विकास का एक इंजन बन गई हैं, जिससे विकास के अन्य सभी आयाम तेजी से बदल रहे हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. मानव समाज के लिए आज के समय में आवश्यक है–

(क) धन (ख) औद्योगिक प्रगति
(ग) ज्ञान एवं सूचना (घ) शिक्षा

उत्तर–(ग) ज्ञान एवं सूचना।

प्रश्न 2. संचार की सरलता का कारण है–

(क) आधुनिक संचार साधन (ख) उच्च शिक्षा
(ग) वैश्वीकरण (घ) इंटरनेट

उत्तर–(क) आधुनिक संचार साधन।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com